

# गारियाबंद में कोविड और उसके बाद के चरणों के दौरान स्कूली छात्रों के लिए मूल्य शिक्षा के शैक्षिक वातावरण का अवलोकन

जागेश्वरी साहू<sup>1</sup>, डॉ सिद्धेश्वर मिश्रा<sup>2</sup>

रिसर्च स्कॉलर, कला एवं मानविकी विभाग, आईएसबीएम विश्वविद्यालय, नवापारा, कोसमी, छत्तीसगढ़<sup>1</sup>

प्रोफेसर, कला एवं मानविकी विभाग, आईएसबीएम विश्वविद्यालय, नवापारा, कोसमी, छत्तीसगढ़<sup>2</sup>

## सार

इस अध्ययन का उद्देश्य गारियाबंद में कोविड-19 के दौरान और उसके बाद स्कूली छात्रों के लिए मूल्य शिक्षा के शैक्षिक वातावरण की चुनौतियों और अवसरों का विश्लेषण करना है। सर्वेक्षण के परिणामों से पता चलता है कि अधिकांश छात्रों ने सहानुभूति (85%) और ईमानदारी (78%) जैसे मूल्यों को महत्वपूर्ण माना है, जबकि सहिष्णुता (60%) और सामाजिक जिम्मेदारी (70%) के प्रति जागरूकता में कमी आई है। शिक्षकों द्वारा अपनाई गई शिक्षण विधियों में, 40% ने ऑनलाइन कक्षाओं का उपयोग किया, जबकि समूह चर्चा (25%) और प्रोजेक्ट कार्य (20%) में भागीदारी कम रही। माता-पिता की चिंताओं में, 60% ने मूल्य शिक्षा के अभाव की चिंता जताई, और 55% ने तकनीकी समस्याओं को समस्या के रूप में उल्लेख किया। सामुदायिक सेवा में केवल 30% छात्रों की भागीदारी ने सामाजिक जिम्मेदारी के विकास में कमी को उजागर किया। इस अध्ययन के निष्कर्षों के आधार पर, मूल्य शिक्षा के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए आवश्यक संसाधनों में प्रशिक्षण कार्यशालाओं की आवश्यकता को महत्वपूर्ण रूप से पहचाना गया है।

**कीवर्ड:** मूल्य शिक्षा, कोविड-19, शैक्षिक वातावरण, गारियाबंद, स्कूली छात्र.

## 1. परिचय

कोविड-19 महामारी ने न केवल स्वास्थ्य क्षेत्र में बल्कि शिक्षा के क्षेत्र में भी व्यापक परिवर्तन लाए हैं, जिसके परिणामस्वरूप शैक्षिक वातावरण में गहरा बदलाव आया है। विशेष रूप से गारियाबंद जैसे क्षेत्रों में, जहां मूल्य शिक्षा बच्चों के समग्र विकास का एक अभिन्न हिस्सा है, महामारी ने कई चुनौतियों को जन्म दिया है। मूल्य शिक्षा, जिसमें नैतिकता, सहानुभूति और सामाजिक जिम्मेदारी जैसे महत्वपूर्ण गुणों को बढ़ावा दिया जाता है, छात्रों के व्यक्तित्व निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। कोविड-19 के दौरान, शैक्षणिक संस्थानों ने ऑनलाइन कक्षाओं और सोशल डिस्टेंसिंग का पालन किया, जिससे छात्रों की सामाजिक इंटरैक्शन में कमी आई, जो मूल्य शिक्षा के लिए आवश्यक होती है। इस अध्ययन का उद्देश्य गारियाबंद में कोविड-19 और उसके बाद के चरणों में मूल्य शिक्षा के शैक्षिक वातावरण का अवलोकन करना है। यह अध्ययन न केवल छात्रों के मूल्यों की समझ को स्पष्ट करेगा, बल्कि शिक्षकों की शिक्षण विधियों, माता-पिता की चिंताओं, और मूल्य शिक्षा में सुधार के लिए आवश्यक संसाधनों की पहचान भी करेगा। इस प्रकार, यह अध्ययन मूल्य शिक्षा के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए ठोस सिफारिशें प्रदान करने में सहायक होगा।

## कोविड-19 का प्रभाव

कोविड-19 महामारी ने विद्यालयों के शैक्षणिक माहौल में एक अभूतपूर्व बदलाव लाया है, जिसने छात्रों की मूल्य शिक्षा की समझ और अनुभव पर गहरा नकारात्मक प्रभाव डाला है। महामारी के चलते, स्कूलों को शारीरिक रूप से बंद करना पड़ा, और शिक्षा का मुख्य माध्यम ऑनलाइन कक्षाएँ बन गया। इस संक्रमण के दौरान, छात्रों की सामाजिक इंटरैक्शन में भारी कमी आई, जो मूल्य शिक्षा के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। मूल्य शिक्षा में नैतिकता, सहानुभूति और सामाजिक जिम्मेदारी जैसे

गुणों का विकास आवश्यक होता है, और ये गुण सामान्यतः समूह गतिविधियों और व्यक्तिगत संपर्कों के माध्यम से ही विकसित होते हैं। ऑनलाइन कक्षाओं के दौरान, छात्रों को एक दूसरे के साथ मिलकर कार्य करने, संवाद करने और सहानुभूतिपूर्ण अनुभवों को साझा करने का अवसर सीमित हो गया। इसके परिणामस्वरूप, छात्रों में सहिष्णुता, सामूहिकता और सामाजिक जिम्मेदारी जैसे मूल्यों की समझ में कमी आई है। इस प्रकार, कोविड-19 ने न केवल शिक्षा की गुणवत्ता को प्रभावित किया है, बल्कि छात्रों के नैतिक और सामाजिक विकास को भी बाधित किया है, जिससे मूल्य शिक्षा के समुचित कार्यान्वयन में कई चुनौतियाँ उत्पन्न हुई हैं।

### शिक्षकों की भूमिका

महामारी के दौरान शिक्षकों की भूमिका मूल्य शिक्षा को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करने में महत्वपूर्ण रही है, लेकिन कोविड-19 के कारण उत्पन्न चुनौतियों ने उनके प्रयासों को बाधित किया है। शिक्षकों ने छात्रों में नैतिकता, सहानुभूति और सामाजिक जिम्मेदारी जैसे मूल्यों को सिखाने के लिए विभिन्न शिक्षण विधियों का उपयोग किया है, जिसमें ऑनलाइन कक्षाएँ, समूह चर्चा, और प्रोजेक्ट कार्य शामिल हैं। हालाँकि, ऑनलाइन शिक्षा के इस नए प्रारूप ने शिक्षकों के सामने कई कठिनाइयाँ पेश की हैं। शिक्षण विधियों में विविधता की कमी और संवादात्मक दृष्टिकोणों के अभाव ने छात्रों की संलग्नता को प्रभावित किया है। इसके अतिरिक्त, संसाधनों की अनुपलब्धता, जैसे कि गुणवत्ता वाली सामग्री और तकनीकी सहायता, ने मूल्य शिक्षा के प्रभावी कार्यान्वयन में बाधाएँ डाली हैं। शिक्षकों की ओर से अधिकतर ऑनलाइन कक्षाएँ और सीमित समूह चर्चाएँ होने के कारण, छात्रों को व्यक्तिगत संपर्क और सामूहिक अनुभवों से वंचित रहना पड़ा। इस स्थिति ने नैतिक शिक्षा के उन पहलुओं को समझने में बाधा उत्पन्न की है, जो सामाजिक समरसता और व्यक्तिगत विकास के लिए आवश्यक हैं। इस प्रकार, शिक्षकों की भूमिका को सशक्त बनाने के लिए सुधारात्मक उपायों की आवश्यकता है।

### माता-पिता की चिंताएँ

कोविड-19 महामारी ने न केवल शिक्षा प्रणाली को प्रभावित किया है, बल्कि माता-पिता की चिंताओं को भी बढ़ा दिया है, विशेष रूप से उनके बच्चों की मूल्य शिक्षा के संबंध में। माता-पिता ने तकनीकी समस्याओं को एक प्रमुख चिंता का विषय माना है। ऑनलाइन कक्षाओं के दौरान, इंटरनेट कनेक्टिविटी की समस्याएँ, उपकरणों की कमी, और तकनीकी ज्ञान की कमी ने बच्चों की शिक्षा को बाधित किया है। इस स्थिति ने न केवल पाठ्यक्रम के व्यवस्थित संचालन में मुश्किलें उत्पन्न कीं, बल्कि मूल्य शिक्षा की प्रभावशीलता को भी प्रभावित किया। इसके अलावा, 60% माता-पिता ने मूल्य शिक्षा के अभाव की चिंता व्यक्त की है, जो बच्चों के नैतिक विकास के लिए अत्यंत आवश्यक है। माता-पिता मानते हैं कि ऑनलाइन शिक्षा के दौरान बच्चों को नैतिक और सामाजिक मूल्यों की शिक्षा में कमी आई है, जो उनके समग्र विकास में एक महत्वपूर्ण कारक है। इस प्रकार, माता-पिता की चिंताएँ दर्शाती हैं कि शिक्षा प्रणाली में सुधार की आवश्यकता है ताकि उनके बच्चों की मूल्य शिक्षा सुनिश्चित की जा सके। इन चिंताओं को ध्यान में रखते हुए, स्कूलों को एक समग्र दृष्टिकोण अपनाने की आवश्यकता है, जो माता-पिता के साथ सहयोग को बढ़ावा दे और बच्चों की नैतिक शिक्षा को सशक्त बनाए।

## 2. अनुसंधान क्रियाविधि

इस अध्ययन में गारियाबंद में कोविड-19 के दौरान और उसके बाद स्कूली छात्रों के लिए मूल्य शिक्षा के शैक्षिक वातावरण का विश्लेषण करने के लिए मिश्रित विधियों का उपयोग किया गया, जिसमें गुणात्मक और मात्रात्मक दोनों प्रकार के डेटा शामिल हैं। अध्ययन का पहला चरण संक्षिप्त सर्वेक्षण था, जिसमें 300 छात्रों और 50 शिक्षकों को शामिल किया गया। इस सर्वेक्षण में छात्रों की मूल्य शिक्षा के प्रति समझ और शिक्षकों के दृष्टिकोण को मापा गया, जिसमें प्रश्नों का फोकस मूल्य शिक्षा की आवश्यकता, छात्रों की भागीदारी, और कोविड-19 के दौरान इसके प्रभाव पर था। दूसरे चरण में 20 शिक्षकों

और 15 माता-पिता के साथ गहन साक्षात्कार आयोजित किए गए ताकि यह समझा जा सके कि महामारी ने मूल्य शिक्षा को कैसे प्रभावित किया। एकत्रित डेटा का सांख्यिकीय विश्लेषण किया गया, जिसमें प्रतिशत और औसत का उपयोग किया गया। इसके अलावा, कुछ ऑनलाइन कक्षाओं का अवलोकन किया गया ताकि मूल्य शिक्षा की प्रस्तुति का मूल्यांकन किया जा सके। अंततः, गारियाबंद के स्कूलों के मौजूदा पाठ्यक्रम की समीक्षा की गई ताकि मूल्य शिक्षा को प्रभावी ढंग से समाहित करने के तरीकों का विश्लेषण किया जा सके।

### 3. परिणाम और चर्चा

इस अनुभाग में गारियाबंद में कोविड-19 के दौरान और उसके बाद मूल्य शिक्षा के शैक्षिक वातावरण पर किए गए सर्वेक्षण और साक्षात्कारों के परिणाम प्रस्तुत किए गए हैं।

#### 3.1. सर्वेक्षण के परिणाम

सर्वेक्षण में शामिल छात्रों ने मूल्य शिक्षा के महत्व को समझने में भिन्नता दिखाई। नीचे दिए गए तालिकाएँ इस संबंध में डेटा प्रस्तुत करती हैं:

तालिका 1 छात्रों की मूल्य शिक्षा के प्रति समझ में प्रस्तुत आंकड़े इस अध्ययन में छात्रों के मूल्यों की समझ को स्पष्ट रूप से दर्शाते हैं। सहानुभूति (85%) और ईमानदारी (78%) के उच्च प्रतिशत यह दर्शाते हैं कि अधिकांश छात्रों ने इन मूल्यों को महत्वपूर्ण माना है, जो एक सकारात्मक संकेत है। इसके विपरीत, सामाजिक जिम्मेदारी (70%) और अनुशासन (75%) के आंकड़े अपेक्षाकृत कम हैं, जो संकेत करते हैं कि छात्रों की इन मूल्यों के प्रति जागरूकता में कमी है। विशेष रूप से सहिष्णुता का प्रतिशत (60%) अन्य मूल्यों की तुलना में सबसे कम है, जो चिंता का विषय है। यह दर्शाता है कि कोविड-19 के दौरान छात्रों के बीच सहिष्णुता और सामाजिक समरसता के मूल्य को समझने में कमी आई है, संभवतः सीमित सामाजिक इंटरैक्शन और ऑनलाइन शिक्षा के प्रभाव के कारण। इस प्रकार, इस तालिका का विश्लेषण यह संकेत करता है कि जबकि छात्रों ने कुछ मूल्यों को समझने में अच्छी प्रगति की है, लेकिन सहिष्णुता और सामाजिक जिम्मेदारी के क्षेत्रों में सुधार की आवश्यकता है।

तालिका 1 छात्रों की मूल्य शिक्षा के प्रति समझ

मूल्य शिक्षा के तत्व	छात्रों का प्रतिशत (%)
सहानुभूति	85
ईमानदारी	78
सामाजिक जिम्मेदारी	70
सहिष्णुता	60
अनुशासन	75

**विवेचना:** इस तालिका से स्पष्ट होता है कि अधिकांश छात्रों को सहानुभूति और ईमानदारी जैसे मूल्यों का महत्व समझ में आया है, जबकि सहिष्णुता में थोड़ी कमी है।

तालिका 2 शिक्षकों द्वारा मूल्य शिक्षा की प्रस्तुति में दर्शाए गए आंकड़े शिक्षकों की शिक्षण विधियों की विविधता को स्पष्ट करते हैं। ऑनलाइन कक्षाओं का उपयोग करने वाले शिक्षकों का प्रतिशत 40% है, जो यह इंगित करता है कि यह विधि सबसे अधिक प्रचलित है। हालांकि, समूह चर्चा (25%) और प्रोजेक्ट कार्य (20%) के उपयोग की संख्या अपेक्षाकृत कम है, जबकि वीडियो सामग्री का योगदान केवल 15% है। यह दर्शाता है कि शिक्षकों ने मूल्य शिक्षा को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करने के लिए इंटरैक्टिव और नवीन विधियों को पूरी तरह से अपनाने में विफलता का सामना किया है। इन आंकड़ों के

आधार पर, यह स्पष्ट होता है कि अधिक विविधता और संवादात्मक शिक्षण विधियों का उपयोग करने की आवश्यकता है ताकि मूल्य शिक्षा को छात्रों तक बेहतर तरीके से पहुंचाया जा सके।

### तालिका 2 शिक्षकों द्वारा मूल्य शिक्षा की प्रस्तुति

शिक्षण विधि	प्रतिशत (%)
ऑनलाइन कक्षाएँ	40
समूह चर्चा	25
प्रोजेक्ट कार्य	20
वीडियो सामग्री	15

**विवेचना:** शिक्षकों ने ऑनलाइन कक्षाओं का उपयोग करके मूल्य शिक्षा प्रस्तुत करने की कोशिश की है, लेकिन केवल 40% शिक्षकों ने इस विधि को अपनाया।

### 3.2. गहन साक्षात्कार के परिणाम

गहन साक्षात्कार से निम्नलिखित प्रमुख बिंदु सामने आए:

- 70% शिक्षकों ने बताया कि कोविड-19 के कारण मूल्य शिक्षा का समावेश चुनौतीपूर्ण रहा।
- 60% माता-पिता ने चिंता जताई कि ऑनलाइन शिक्षा में मूल्यों की शिक्षा का उचित ध्यान नहीं दिया गया।
- 80% शिक्षकों ने माना कि मूल्य शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए अधिक संसाधनों की आवश्यकता है।

तालिका 3 माता-पिता की चिंताएँ में विभिन्न चिंताओं के प्रतिशत प्रस्तुत किए गए हैं, जो गारियाबंद में कोविड-19 के दौरान स्कूली शिक्षा पर माता-पिता की दृष्टि को स्पष्ट करते हैं। सबसे अधिक चिंता तकनीकी समस्याओं (55%) के प्रति दिखाई देती है, जिससे यह संकेत मिलता है कि ऑनलाइन शिक्षा के दौरान कई माता-पिता ने तकनीकी बाधाओं का सामना किया है। इसके अलावा, 35% माता-पिता ने शिक्षण सामग्री की कमी की चिंता व्यक्त की, जो यह दर्शाता है कि उन्हें आवश्यक संसाधनों की उपलब्धता में कमी महसूस हुई। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि 60% माता-पिता ने मूल्य शिक्षा के अभाव को एक प्रमुख चिंता का विषय बताया। यह आंकड़ा स्पष्ट करता है कि माता-पिता मानते हैं कि उनके बच्चों को नैतिक और सामाजिक मूल्यों की शिक्षा प्राप्त करने में कमी आई है, जो उनकी समग्र विकास में एक महत्वपूर्ण कारक है। इस प्रकार, माता-पिता की ये चिंताएँ शिक्षा प्रणाली में सुधार की आवश्यकता को उजागर करती हैं।

### तालिका 3 माता-पिता की चिंताएँ

चिंता का प्रकार	प्रतिशत (%)
तकनीकी समस्याएँ	55
शिक्षण सामग्री की कमी	35
मूल्य शिक्षा का अभाव	60

**विवेचना:** माता-पिता की चिंताओं के अनुसार, मूल्य शिक्षा का अभाव 60% मामलों में मुख्य चिंता का विषय रहा, जो ऑनलाइन शिक्षा के प्रभाव को दर्शाता है।

तालिका 4 मूल्य शिक्षा में भागीदारी में विभिन्न गतिविधियों में छात्रों की भागीदारी के प्रतिशत को दर्शाया गया है। सामुदायिक सेवा में भागीदारी केवल 30% है, जो यह संकेत करता है कि छात्रों ने सामाजिक जिम्मेदारी की गतिविधियों में अपेक्षाकृत कम रुचि दिखाई है। समूह परियोजनाओं में 25% छात्र शामिल हुए, जो सामूहिक कार्य के महत्व को दर्शाता है,

लेकिन यह भी कम है। ऑनलाइन चर्चाओं में भागीदारी और व्यक्तिगत अध्ययन दोनों ही 20% और 25% के स्तर पर हैं। ये आंकड़े दर्शाते हैं कि कोविड-19 महामारी के कारण छात्रों की सामूहिक गतिविधियों और संवादात्मक शिक्षा में भागीदारी में कमी आई है। इस प्रकार, तालिका से स्पष्ट होता है कि मूल्य शिक्षा के लिए आवश्यक सामुदायिक और समूहगत अनुभवों की कमी छात्रों के नैतिक विकास में बाधा डाल सकती है, जिससे उनके व्यक्तित्व निर्माण पर नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है।

**तालिका 4 मूल्य शिक्षा में भागीदारी**

गतिविधि	छात्रों का प्रतिशत (%)
सामुदायिक सेवा	30
समूह परियोजनाएँ	25
ऑनलाइन चर्चाएँ	20
व्यक्तिगत अध्ययन	25

**विवेचना:** छात्रों की भागीदारी सामुदायिक सेवा में कम रही, जो मूल्य शिक्षा को वास्तविक जीवन में लागू करने के लिए आवश्यक है।

तालिका 5 मूल्य शिक्षा में सुधार के लिए आवश्यक संसाधन में विभिन्न संसाधनों की आवश्यकता के प्रतिशत को प्रस्तुत किया गया है। सबसे पहले, 50% शिक्षकों ने प्रशिक्षण कार्यशालाओं की आवश्यकता को प्रमुख बताया, जो यह दर्शाता है कि वे मूल्य शिक्षा को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करने के लिए अपने कौशल में सुधार की आवश्यकता महसूस करते हैं। इसके बाद, 40% शिक्षकों ने मूल्य आधारित पाठ्यक्रम को महत्वपूर्ण माना, जो यह इंगित करता है कि एक समर्पित पाठ्यक्रम की आवश्यकता है जो छात्रों को नैतिक मूल्यों की शिक्षा प्रदान कर सके। हालांकि, सामुदायिक सहयोग की आवश्यकता केवल 10% शिक्षकों द्वारा व्यक्त की गई है, जो इस क्षेत्र में अपेक्षाकृत कम प्राथमिकता को दर्शाता है।

**तालिका 5 मूल्य शिक्षा में सुधार के लिए आवश्यक संसाधन**

संसाधन का प्रकार	आवश्यक प्रतिशत (%)
प्रशिक्षण कार्यशालाएँ	50
मूल्य आधारित पाठ्यक्रम	40
सामुदायिक सहयोग	10

**विवेचना:** 50% शिक्षकों ने प्रशिक्षण कार्यशालाओं की आवश्यकता को महत्वपूर्ण बताया, जो उन्हें मूल्य शिक्षा को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करने में मदद करेगी।

#### 4. निष्कर्ष

इस अध्ययन के निष्कर्ष गारियाबंद में कोविड-19 के दौरान और उसके बाद स्कूली छात्रों के लिए मूल्य शिक्षा के शैक्षिक वातावरण की चुनौतियों और अवसरों को स्पष्ट करते हैं। सर्वेक्षण के परिणाम बताते हैं कि अधिकांश छात्रों ने सहानुभूति (85%) और ईमानदारी (78%) जैसे मूल्यों को महत्वपूर्ण माना है, जबकि सहिष्णुता (60%) और सामाजिक जिम्मेदारी (70%) के प्रति जागरूकता में कमी दिखाई देती है। यह संकेत करता है कि महामारी के दौरान छात्रों के बीच मूल्यों की समझ में विविधता है, जिससे नैतिक शिक्षा के समुचित कार्यान्वयन में बाधाएँ आ रही हैं। शिक्षकों की शिक्षण विधियाँ भी शोध में महत्वपूर्ण रही हैं। 40% शिक्षकों ने ऑनलाइन कक्षाओं का उपयोग किया, जबकि अन्य विधियों जैसे समूह चर्चा (25%) और प्रोजेक्ट कार्य (20%) में भागीदारी कम रही। यह दर्शाता है कि शिक्षकों ने इंटरैक्टिव और विविध तरीकों को

अपनाने में बाधाएँ महसूस की हैं। गहन साक्षात्कारों में सामने आई माता-पिता की चिंताएँ भी महत्वपूर्ण हैं। 60% माता-पिता ने मूल्य शिक्षा के अभाव की चिंता व्यक्त की, जो बच्चों के नैतिक विकास के लिए अत्यावश्यक है। इसके साथ ही, 55% ने तकनीकी समस्याओं की शिकायत की, जो ऑनलाइन शिक्षा के दौरान एक बड़ी चुनौती रही। शिक्षा में भागीदारी की दृष्टि से, सामुदायिक सेवा में केवल 30% छात्रों ने भाग लिया, जो सामाजिक जिम्मेदारी के विकास में कमी को दर्शाता है। वहीं, मूल्य शिक्षा में सुधार के लिए आवश्यक संसाधनों की बात करें, तो 50% शिक्षकों ने प्रशिक्षण कार्यशालाओं की आवश्यकता को महत्वपूर्ण बताया, जो दर्शाता है कि उन्हें मूल्य शिक्षा को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करने के लिए कौशल में सुधार की आवश्यकता है।

### भविष्य के शोध का दायरा

1. भविष्य के शोध में मूल्य शिक्षा के लिए प्रभावी शिक्षण विधियों और उपकरणों की पहचान करने पर ध्यान केंद्रित किया जा सकता है। विशेष रूप से, यह अध्ययन किया जा सकता है कि कैसे तकनीकी और इंटरैक्टिव विधियों को अधिक प्रभावी ढंग से लागू किया जा सकता है।
2. माता-पिता की भूमिका और उनके दृष्टिकोण पर अधिक शोध किया जा सकता है, जिसमें यह समझने की कोशिश की जाएगी कि वे अपने बच्चों की नैतिक शिक्षा को कैसे बढ़ावा दे सकते हैं और ऑनलाइन शिक्षा के दौरान उनकी चिंताओं को कैसे संबोधित किया जा सकता है।
3. सामुदायिक सेवा में छात्रों की भागीदारी को बढ़ाने के लिए कार्यक्रमों और पहलों का विकास और मूल्यांकन किया जा सकता है। शोध में यह जांचा जा सकता है कि कैसे सामुदायिक सेवा छात्रों में सामाजिक जिम्मेदारी के विकास को प्रभावित कर सकती है।
4. तकनीकी समस्याओं के प्रभाव का गहन अध्ययन किया जा सकता है, ताकि यह समझा जा सके कि कौन सी तकनीकी बाधाएँ छात्रों और शिक्षकों के लिए मूल्य शिक्षा को प्रभावित कर रही हैं, और इसके समाधान के लिए सुझाव दिए जा सकें।

### 5. संदर्भ

1. अल्माइया, एम.ए., और अल मुलहेम, ए. (2019)। मोबाइल लर्निंग एप्लिकेशन के उपयोग के इरादे को प्रभावित करने वाले आवश्यक कारकों का विश्लेषण: विश्वविद्यालयों द्वारा अपनाने वालों और न अपनाने वालों के बीच तुलना। शिक्षा और सूचना प्रौद्योगिकी, 24(2), 1433-1468।
2. अल्माइया, एम.ए., और एलयूससेफ, आई.वाई. (2019)। ई-लर्निंग सिस्टम के वास्तविक उपयोग पर पाठ्यक्रम डिजाइन, पाठ्यक्रम सामग्री समर्थन, पाठ्यक्रम मूल्यांकन और प्रशिक्षक विशेषताओं के प्रभाव का विश्लेषण। **IEEE Access**, 7, 171907-171922.
3. एल्लाहिर, एम.ई. (2019)। विकासशील देशों में ई-लर्निंग: क्या यह रामबाण है? सूडान का एक केस स्टडी। **IEEE एक्सेस**, 7, 97784-97792।
4. नैसिम्बेनी, एफ., और बर्गोस, डी. (2019)। उच्च शिक्षा में मुक्त शैक्षिक संसाधनों के उपयोग और मुक्त शिक्षण प्रथाओं को अपनाने के बीच संबंधों का खुलासा। स्थिरता, 11(20), 5637.
5. नैसिम्बेनी, एफ., और बर्गोस, डी. (2016)। 'ओपन एजुकेटर की खोज में: यूनिवर्सिटी एजुकेटर के बीच ओपननेस अपनाने को बढ़ाने के लिए एक परिभाषा और एक रूपरेखा का प्रस्ताव।' ओपन एंड डिस्ट्रिब्यूटेड लर्निंग में अनुसंधान की अंतर्राष्ट्रीय समीक्षा, 17(6).



6. निशिगावा , के., और एट अल, ओ.के. (2017)। फिक्स्ड प्रोस्थोडॉन्टिक शिक्षा में फ़्लिप्ट क्लासरूम और टीम-आधारित सीखने के बीच तुलना। जर्नल ऑफ़ प्रोस्थोडॉन्टिक रिसर्च, 61(2), पृ.217-222।
7. **OECD.** (2015). स्कूली शिक्षा का नया स्वरूप: नवीन शिक्षण प्रणालियों की ओर. पेरिस: **OECD** प्रकाशन.
8. ऑफ़कॉम . (2014). “वयस्कों का मीडिया उपयोग और दृष्टिकोण रिपोर्ट।” लंदन: ऑफ़कॉम . 7 मई को एक्सेस किया गया।
9. स्ट्रैक , सी.डी. (2019)। क्या **MOOCs** ओपन एजुकेशनल रिसोर्स हैं? **OER** और **MOOCs** के इतिहास, परिभाषाओं और टाइपोलॉजी पर एक साहित्य समीक्षा। ओपन प्रैक्सिस, खंड 11 अंक 4, अक्टूबर-दिसंबर 2019, पृष्ठ 1-11 (ISSN 2304-070X)।